# कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय मूल्य

डॉ. जरफिशा जैदी, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

प्रस्तुत शोध पत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय मूल्यों के स्वरूप पर विचार किया गया है। निरंतर विकसित होते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में मानवीय समाज में एक मूलभूत प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि हम बुद्धिमान मशीनों के सहजीवन की ओर बढ़ रहे हैं तो इससे मानवीय मूल्यों के स्वरूप पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इस प्रश्न पर विचार करने से पहले यह स्पष्ट करना अपेक्षित है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है तथा मानवीय मूल्यों को हम किस प्रकार परिभाषित करते हैं। जैसा कि विदित है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर साइंस की एक आधुनिकतम तकनीक है जिसके माध्यम से कंप्यूटर ऐसी क्षमता प्राप्त कर लेता है कि वह मानव भाषा को लिखना पढना और समझना सीख लेता है। अत्यधिक मात्रा में आंकड़ों को इकट्ठा कर सकता है। उनके विश्लेषण के आधार पर निर्णय ले सकता है और अपने सुझाव प्रस्तुत कर सकता है। यानी कि कंप्यूटर रूपी मशीन मानवीय बुद्धि की कुछ महत्वपूर्ण क्षमताओं को हासिल कर लेती है तो हम उसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहते हैं। अब हम विचार करते हैं कि मूल्य क्या है। यूं तो मूल्य शब्द की सर्वमान्य परिभाषा करना कठिन है क्योंकि यह एक ऐसा शब्द है जिसका विभिन्न अर्थों में प्रयोग होता रहा है लेकिन फिर भी हम यह कह सकते हैं की मूल्य शब्द से एक ऐसे गुण का बोध होता है जिसके द्वारा मनुष्य की कोई आवश्यकता या इच्छा की तृप्ति होती है। हम जानते हैं कि हमारे लिए सभी वस्तुएं और मानसिक अवस्थाएं समान रूप से मूल्यवान नहीं होती है। कुछ केवल साधन के रूप में मूल्यवान होती हैं और कुछ परम साध्य होती है इसीलिए मूल्यों को हमेशा दो वर्गों में देखा जाता रहा है। साधारणतया इन्हें कहा जाता है साधन मूल्य और साध्य मूल्य। साधन मूल्यों SEA: को ही आर्थिक मूल्य भी कह सकते हैं। जो हमारे शरीर की या आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इस शोध पत्र में हम साध्य मूल्य के ऊपर विचार कर रहे हैं। ये मूल्य मनुष्य की उन मानसिक अवस्थाओं से संबंधित होते हैं जिनका शुभत्व व्यक्ति, देश, काल, परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता है। वह सबके लिए हमेशा शुभ और वांछनीय होते हैं। स्वत साध्य मूल्य पर विचार करते हुए हम इस नतीजे पर पहुंचे है कि स्वतंत्रता, समानता, मानवीय गरिमा, शुभ संकल्प आदि महत्वपूर्ण स्वत साध्य मूल्य है। इन मूल्यों पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का क्या प्रभाव पड़ रहा है क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निरंतर विकास से हम इन महत्वपूर्ण मूल्यों को और सशक्त और समृद्ध बनाएगी या इस तकनीक के विकास से हमारे यह स्वत साध्य मूल्य जो मानवीय समाज की आधारशिला माने गए हैं, कमजोर पड़ जाएंगे। हम इन दोनों ही संभावनाओं पर इस शोध पत्र में विचार कर रहे हैं।